Postal Regn. - RTK/010/2023-25
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

मई 2024 (प्रथम)

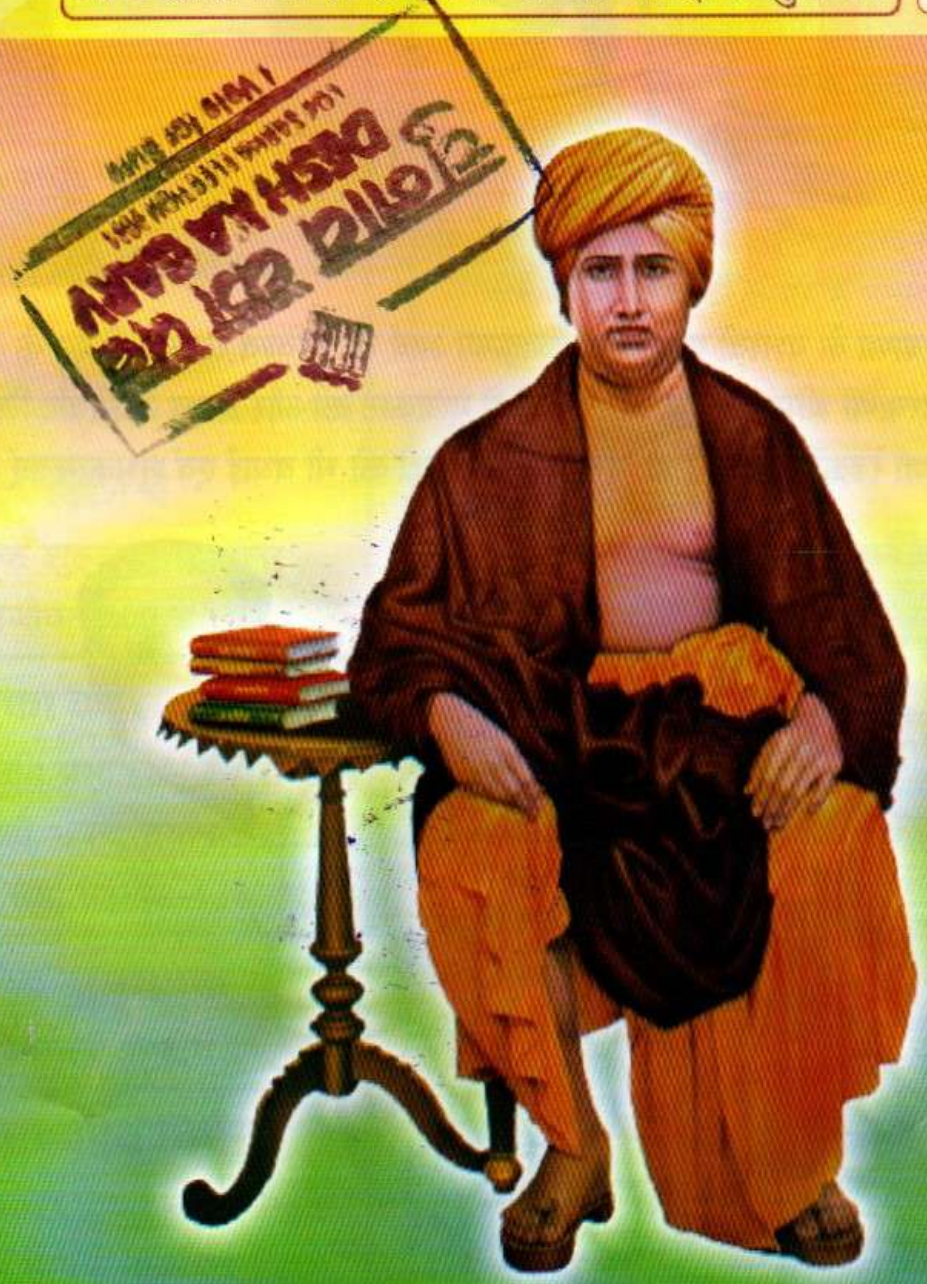

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य जी ने विश्व रेडक्रॉस दिवस के अवसर पर महामहिम राज्यपाल हरयाणा श्रीमान् बंडारू दत्तात्रेय जी से मुलाकात की और उनका आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर हरयाणा रेडक्रॉस सेक्रेटरी डॉ. मुकेश अग्रवाल जी को भी बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य जी के कैथल स्थित कार्यालय में आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मंत्री श्री विनय आर्य जी पहुंचे। इस दौरान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा और दिल्ली से संबंधित कई विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मंत्री श्री विनय आर्य जी को स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,125
विक्रम संवत् 2081
दयानन्दाब्द 201

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 20 अंक 7

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क
देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये
विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

मई, 2024 (प्रथम)
1 से 15 मई, 2024 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय—वेद-प्रवचन 2
2. (1) ईश्वर पर अविश्वास के कारण 3
3. स्वास्थ्य चर्चा—लहसुन के अनेक लाभ 4
4. योगेश्वर एवं वेदर्षि दयानन्द 5
5. ऋग्वेद-यजुर्वेद-सामवेद-अथर्ववेद ईश्वर द्वारा प्रदत्त कृत धर्मज्ञान है बाकी संसार के समस्त मतों के धर्मग्रन्थ मनुष्यों द्वारा रचित हैं 7
6. कविता—सुनो, ध्यान से नर-नारी! 8
7. वो संन्यासी जो क्रान्ति के अग्रदूत बने 9
8. संघर्ष से मिले उपलब्धि 10
9. ईश्वर की उपासना का महत्त्व जानें व इसका ज्ञानपूर्वक पालन करें 11
10. समाचार-प्रभाग व शेषभाग 14

आर्य प्रतिनिधिपाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन—उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

वेदमन्त्र

ऐसे दृश्य हर देश में मिलते हैं। मैंने उससे पूछा कि यह क्या है, जिसको तुमने हाथ जोड़े। उत्तर मिला, "मन्दिर है।" मैंने पूछा, "किसका?" उसने कहा, "भगवान् का।" मैंने पूछा, "क्या देवी का?" उसने कहा, "हाँ।" फिर मैंने पूछा, "क्या शिव का?" उत्तर मिला, "हाँ।" फिर मैंने पूछा, "क्या बुद्ध भगवान् का?" उसने उत्तर दिया, "हाँ।" मैंने यह नहीं पूछा कि तुमने क्यों उपासना की। वह उपासक तो था। कुछ तो भावना उसके हृदय में थी जिसने उसके भीतर प्रेरणा की कि वह खड़ा होकर एक क्षण के लिए मन्दिर की ओर हाथ जोड़ ले, परन्तु वह यह नहीं जानता था कि उपासना, उपासक और उपास्य की विशेषता क्या है?

प्रात:काल भारतवर्ष के नगरों या ग्रामों के चौराहों पर आप देखेंगे कि स्त्रियाँ जल का लोटा और थाली में फूल रखकर लाती हैं। चौराहे पर पानी उड़ेलकर फूल चढ़ाती हैं और कुछ खाद्यपदार्थ भी रख देती हैं। माथे पर टीका लगाती हैं, हाथ जोड़ती हैं और चल देती हैं। यह भी उपासना है, परन्तु यदि आप उनके अन्त:करण को टटोलने के लिए प्रश्न करने आरम्भ कर दें तो वे एक का उत्तर भी न दे सकेंगी। बहुत-से लोग पीपल के वृक्ष पर एक लोटा पानी चढ़ाते हैं। उसकी जड़ को नमस्कार करते हैं। माथे पर टीका लगाते हैं और परिक्रमा करके चल देते हैं। यह भी एक उपासना की विधि है जिसमें उपासक को न अपनी विशेषताओं का परिज्ञान है न उपास्य का विशेषताओं का।

उपासक को जब पता होता है कि मुझ में अमुक गुण की कमी है तो वह ऐसे उपास्य की खोज करता है जिससे उसे उसी गुण की प्राप्ति हो सके और यदि कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो गुण की प्राप्ति न करा सके तो वह उसे झट त्याग देता है। स्वामी दयानन्द जब घर से निकले तो गुरु की खोज आरम्भ की। कैसे गुरु की? जो सच्चे ब्रह्म की प्राप्ति करा सके। उनको गुरु तो बहुत-से मिले परन्तु गुणहीन पाकर उन्होंने सब को त्याग दिया। इन गुरुओं के लाखों चेले थे और वे सब उनसे सन्तुष्ट थे। क्यों? इसलिए कि चेलों को यह पता ही न था कि उनको अपनी किस कमी को पूरा करना है और वह कमी किसको गुरु बनाने से पूरी हो सकेगी। वस्तुत: जीव जो उपासक हैं उनमें बहुत-सी कमियाँ हैं जो जीव के विकास में बाधक हैं। वास्तविक ज्ञान

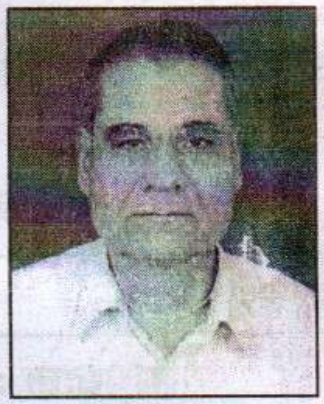

की कमी, वास्तविक क्रियाशीलता की कमी और वास्तविक सुख की कमी। यद्यपि जीव सत् भी है और चित् भी, परन्तु ब्रह्म की सत्ता और ब्रह्म के चित् से जीव की सत्ता और जीव के चित्त में बड़ा भेद है। जीव को अपनी सत्ता की अनुभूति ही नहीं है। वह तो अपने को हाड़-मांस का लोथड़ा मात्र समझता है। ब्रह्म की सत्ता भी पूर्ण है और ज्ञान भी पूर्ण। जीवत्व एक त्रिभुज है जिसकी आवश्यक भुजाएँ तीन हैं—सत्ता, चित्ता और आनन्द। आनन्द अकेला ठहर ही नहीं सकता जहाँ दो अन्य भुजाएँ न हों। गन्ने का रस गन्ने में होता है। इक्षुदण्ड के बिना गन्ने का रस नहीं मिल सकता। इसीलिए जीव को परमात्मा, ब्रह्म, सच्चिदानन्दस्वरूप की उपासना की आवश्यकता होती है, जो पीली मिट्टी के एक ढेले को उपास्य बना देने से पूरी नहीं होती। कहते हैं जो मिट्टी या पत्थर को पूजता है उसकी बुद्धि मिट्टी या पत्थर जैसी हो जाती है। वस्तुत: मिट्टी या पत्थर को पूजता ही वह है कि जिसकी बुद्धि पहले से मिट्टी जैसी हो और उसे यह ज्ञान न हो कि वह मिट्टी या पत्थर से कौन-सा गुण लेना चाहता है जिसकी उसमें कमी है। यदि पत्थर चेतन की उपासना करता तो उसमें कुछ चेतनता आ जाती जैसे लोहे की सुई घड़ीसाज के पास जाकर चलने लगती है। परन्तु जब चेतन उपासक हो और जड़ उपास्य हो तो उपास्य के गुण उपासक में आयेंगे। उपासक के गुण उपास्य में नहीं। इतने मूर्तिपूजक मूर्तियों को पूजते हैं, परन्तु मूर्तियाँ सदा जड़ रहती हैं और किसी उपासक में चेतनता की वृद्धि नहीं कर सकतीं।

क्रमश: अगले अंक में....

(1) ईश्वर पर अविश्वास के कारण

❑ संकलन—कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

(2) क्या कारण हैं कि पुण्य आत्मायें सदैव दु:खी देखी जाती हैं?

प्रश्न-कुछ लोग ईश्वर पर इसलिए विश्वास नहीं करते क्योंकि वह आमतौर पर देखते हैं कि पापी सम्पन्न रहते हैं और पुण्य आत्मायें प्राय: दु:खी रहती हैं।

उत्तर-इसका उत्तर यह है कि लोग पापियों को सुख में और पुण्यात्माओं को दु:ख में देखकर कारण और कार्य का सम्बन्ध लगा देते हैं। वह उसकी पृष्ठभूमि में नहीं जाते। इसे एक उदाहरण से स्पष्ट करते हैं। एक व्यक्ति चोरी करके आया और घर आकर सन्ध्या, यज्ञ करने लगा। पुलिस ने उसका पीछा किया। उसको आकर पकड़ लिया। तभी लोगों ने कहना प्रारम्भ कर दिया, "देखो! बेचारा सन्ध्या-यज्ञ कर रहा था, पुलिस ने अकारण उसको पकड़ लिया।" बन्धुओ! उसे इसलिए नहीं पकड़ा गया कि वह सन्ध्या-यज्ञ कर रहा था, बल्कि उसके अपराध के लिए उसे पकड़ा गया जो कि उसने कुछ समय पूर्व किया था। लोग जब यह कहते हैं कि सन्ध्या और यज्ञ करने वाले उस पुण्यात्मा को दु:ख मिला। यह उनकी धारणा गलत है। वे यह नहीं जानते कि उसे चोरी करने के अपराध में पुलिस पकड़ ले गई।

पापी सुख में दिखते हैं। यह धारणा भी लोगों की ठीक नहीं है। सुख और दु:ख कर्मों के कारण मिलते हैं। इसे एक दृष्टान्त से समझते हैं। मैं यह बता दूँ कि दृष्टान्त केवल समझने के लिए होते हैं। इसमें कुछ लोग सिद्धान्त हनन की बात करते हैं जो कि ठीक नहीं है, क्योंकि दृष्टान्त तो लोकश्रुतियों और किम्वदन्तियों के आधार पर भी बनाये जाते हैं। कल्पित दृष्टान्त इस प्रकार है—

एक बार की बात है कि एक गाय किसी कीचड़ वाले स्थान पर गिर गई। एक व्यक्ति जो उधर से गुजर रहा था वह दुष्ट स्वभाव का था। उसने गाय को एक ठोकर और मार दी और आगे चल पड़ा। थोड़ी दूरी चलने पर एक स्वर्ण से भरा थैला उसे मिला। एक और व्यक्ति भी वहाँ से निकल रहा था, उसे गाय पर दया आ गई। उसने अपने कपड़े उतारे, गाय को बाहर निकाला। हाथ-मुँह धोया और आगे चल दिया। थोड़ी देर के पश्चात् उसे भी ठोकर लगी और उसकी एक टांग टूट गई। इन दोनों घटनाओं से लोगों ने यह कहना प्रारम्भ कर दिया कि पापी सुखी दिखाई देते हैं और पुण्यात्मा दु:खी, परन्तु लोग इसके मूल में नहीं जाते। जिस व्यक्ति ने गाय को ठोकर मारी, इसका दण्ड उसे मिलेगा, परन्तु जो स्वर्ण से भरा थैला मिला है यह उसके किसी पिछले कर्मों का पारितोषिक है, गाय को ठोकर मारने का पारितोषिक नहीं। जिस व्यक्ति ने गाय को कीचड़ से बाहर निकाला है, उसे इस पुण्य का सुभ लाभ निश्चित मिलेगा। उसकी टांग का टूटना उसका गाय की सेवा करने का दण्ड नहीं, बल्कि असावधानी से चलने व किसी पापकर्म का फल है जो उसे ज्ञात नहीं है। गाय की सेवा करने का सुख लाभ उसे अवश्य मिलेगा। इसलिए यह कहना कि पापी सुखी दिखाई देते हैं और पुण्य करने वाले दु:खी, यह उनकी धारणा ठीक नहीं है।

अच्छा कार्य करने से हमें अच्छा फल मिलता है और पाप करने से हमें बुरा फल मिलता है। कहा भी है—किये हुए अच्छे और बुरे कर्मों का फल हमें भोगना पड़ता है, परन्तु प्राय: यह देखा जाता है कि पापी मनुष्य सुखी रहते हैं और पुण्यात्मा दु:खी रहते हैं। यदि ध्यान से देखा जाए तो बात ऐसी नहीं होती। कर्म थोड़ी देर तक किया जाता है और उसका फल बहुत देर तक मिलता रहता है। हम भोजन थोड़ी देर तक करते हैं, परन्तु उससे हमारा पेट बहुत देर तक भरा रहता है। यदि ऐसा न होता तो कर्म करने में किसी की रुचि ही नहीं होती? यदि हम अच्छे कर्म कर रहे हैं और हमें बुरा फल मिल रहा है ऐसा क्यों? अब आइए, इस पर तनिक विचार करें। क्रमश: अगले अंक में....

स्वास्थ्य-चर्चा

लहसुन के अनेक लाभ

गतांक से आगे....

इसका प्रयोग नस्य रूप में भी हो सकता है। लहसुन का निकाला हुआ तेल सूंघने से फेफड़ों के क्षयादि रोगों में बहुत लाभ होता है। इस प्रकार इसका प्रयोग मुख द्वारा सेवन कराने, सुंघाने और लेप करने आदि विधियों में सफलता पूर्वक किया जा सकता है।

विभिन्न देशों में लहसुन का उपयोग

लहसुन का उपयोग और उसके महत्त्व को भारत में ही स्वीकार किया जाता हो, ऐसा नहीं समझना चाहिए। इसका प्रयोग विभिन्न देशों में विविध प्रकार से होता आया है।

लहसुन में जो गुण हैं, उसके विषय में जानकारी होने पर अनजान देशों में भी उपयोग आरम्भ हुए और प्रयोगकर्त्ताओं में उसमें अनेक गुणों का अनुभव किया। इस विषय में थोड़ा परिचय दे देना अनुपयुक्त नहीं होगा।

यूरोप-योरोप में इसका प्रयोग प्लेग महामारी को नष्ट करने में होता रहा है। एक बार सन् 1565 में इंग्लैण्ड में प्लेग फैला था। इस महामारी से सर्वत्र विनाश ही विनाश दिखाई देता था। लहसुन को कीटाणुनाशक जानते हुए भी वहाँ के लोग दुर्गन्ध के कारण उससे घृणा करते थे। किन्तु चेस्टर के निवासी कुछ लोगों ने उस समय लहसुन का प्रयोग किया था, इसलिए वे लोग प्लेग के शिकार न हो सके।

उसके बाद तो वहाँ लहसुन का उपयोग बहुत होने लगा। गाँवों की सफाई कृमिजन्य रोगों की निवृत्ति आदि अनेक कार्यों में लहसुन की उपयोगिता समझी गई और इसके द्वारा प्रथम महायुद्ध में घायल हुए सैनिकों तक की प्राण-रक्षा हुई। अनेक चिकित्सक एक महौषधि के रूप में इसका प्रयोग करने लगे।

परीक्षण-पर-परीक्षण चलने लगे और तब विद्वानों और वैज्ञानिकों ने पाया कि लहसुन तपेदिक की अचूक औषधि है। फिर तो इसका प्रयोग सब प्रकार क्षय-रोग में होने लगा, जिसके फलस्वरूप अधिकांश रोगी क्षयमुक्त होकर नवजीवन प्राप्त करने लगे। इसके बाद इसका उपयोग भी अनेक रोगों में सफलतापूर्वक होने लगा।

अमेरिका-अमेरिका में भी लहसुन की तीव्र गन्ध के कारण उसके गुणावगुण की ओर किसी का ध्यान नहीं गया। परन्तु इंग्लैण्ड में इसके प्रयोगों की सफलता सुनने के बाद ही वह उसकी ओर आकर्षित हो गया। विशेषकर द्वितीय महायुद्ध में उसका उपयोग आरम्भ किया गया।

अमेरिकी वैज्ञानिकों के मत में लहसुन का प्रयोग उच्च रक्तचाप सामान्य बनाने में बहुत उपयोगी है। क्षय, जीर्ण ज्वर, म्यादी ज्वर, निमोनिया आदि में भी यह लाभप्रद है। डिप्थीरिया (कण्ठ रोहिणी) में भी यह अद्‌भुत गुण दिखाता है। नाड़ी संस्थान को बल देने और पाचन संस्थान को अधिक क्रियाशील बनाने में भी यह उपयोगी है। यदि इनका आहार रूप मे निरन्तर सेवन किया जाय तो किसी प्रकार की हानि नहीं करता।

यही कारण है कि वर्तमान समय में अमेरिका में लहसुन का उपयोग अधिक मात्रा में होता है व संसार में अधिक उपज प्राप्त की जाती है।

इटली-इटली में बहुत लम्बे समय से लहसुन का उपयोग होता रहा है। वहाँ के विशेषज्ञ इसे रोगाणु विनाशक और स्वास्थ्यवर्द्धक मानते रहे हैं। उनके मत से यह शरीर में स्थित विषैले जीवाणुओं और विजातीय द्रव्यों को नष्ट करने में उपयोगी है। इसके द्वारा अनेक भयंकर रोगों पर भी काबू पाया जा सकता है।

इटली के एक पशुपालन विशेषज्ञ वर्जिन ने लहसुन को किसानों के लिए भी अत्युपयोगी माना है। उनके मत में कृषकों को जो कठिन परिश्रम करना होता है, उससे उनकी शारीरिक शक्ति का ह्रास होता है। उस शक्ति को बनाये रखने अथवा पुनः प्राप्त करने के लिए लहसुन का प्रयोग अनिवार्य रूप से आवश्यक समझना चाहिए।

यूनान-इस देश में भी लहसुन का प्रयोग बहुत समय से होता चला आ रहा है। यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू ईसा से पूर्व हुआ था। उसके मत में लहसुन रेचक, उत्तेजक और पाष्टिक भी है। जिस रोग में मनुष्य जल से डरता है, उस रोग को भी दूर करने या दूर होने में सहायता करने में यह उपयोगी है।

क्रमशः अगले अंक में...

योगेश्वर एवं वेदर्षि दयानन्द

❑ डॉ० विवेक आर्य

आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द सरस्वती वेदों के उच्चकोटि के विद्वान् एवं सिद्ध योगी थे। योग में सफलता, वेदाध्ययन व वेदज्ञान के कारण उन्हें सत्यासत्य का विवेक प्राप्त हुआ था। वह ईश्वर के वैदिक सत्यस्वरूप के जानने वाले थे। वेदों में सभी सत्य विद्यायें हैं। इन सब विद्याओं का ज्ञान भी उनको वेदाध्ययन एवं योग सिद्धि से ही प्राप्त हुआ था। उन्होंने घोषणा की थी कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है। ऋषि दयानन्द से पूर्व महाभारतकाल पर्यन्त हमारे सभी ऋषि वेदों को सत्य ज्ञान का भण्डार स्वीकार करते थे। स्वामी दयानन्द जी ने ऋषि परम्पराओं को ही आगे बढ़ाया था। हमारे सभी ऋषि योगी होते थे। योग क्या है। योग आत्मा को परमात्मा से जोड़ने और ईश्वर का साक्षात्कार करने की विद्या को कहते हैं। योगमार्ग का आरम्भ महर्षि पतंजलिकृत योगदर्शन के अध्ययन से आरम्भ होता है। योग के आठ अंग हैं जो क्रमशः यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि हैं। योगमार्ग पर आरूढ़ व्यक्ति को यम व नियमों का पालन करते हुए आसन और प्राणायाम का अभ्यास करना होता है। प्रत्याहार में इन्द्रियों को उनके विषयों से वियुक्त करते हैं और धारणा में चित्त को देह के किसी एक देश, अंग विशेष अथवा लक्ष्य विशेष में बांध देते है अथवा टिका देते हैं। ध्यान में चित्त को देह के जिस अंग विशेष व लक्ष्य प्रदेश में बांधा गया था उसमें पूर्णरूपेण एकाग्रता को बनाये रखा जाता है। जब तक एकाग्रता बनी रहती है यह अवस्था ध्यान की होती है। यदि एकाग्रता भंग होती है तो ध्यान टूट जाता है। ध्यान की निरन्तरता व ध्यान की अवस्था ही समाधि कहलाती है। ऋषि दयानन्द ने योग के सभी अंगों को सिद्ध किया हुआ था जिससे वह एक सफल योगी थे। मनुष्य योगी तो बन सकता है परन्तु ज्ञान प्राप्ति के लिए उसे वेदांग के अन्तर्गत शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त व निघण्टु आदि का अध्ययन करना पढ़ता है। इसके बाद वेदांग के कल्प व ज्योतिष ग्रन्थों का अध्ययन पूर्ण कर वेदों का अध्ययन किया जा सकता है। ऋषि दयानन्द ने वेदांग को स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से मथुरा में पढ़ा था। इससे उनमें वेदों का अध्ययन करने की योग्यता उत्पन्न हो गई थी। शिक्षा समाप्त कर उन्होंने वेदों को प्राप्त किया और उनका आद्योपान्त अध्ययन किया जिससे वह वेदों के विद्वान बने। योगी ही वेदों का उच्चकोटि का विद्वान् बनता है और ऋषि वेदों के अपूर्व विद्वान् बने जिससे उनका उच्चकोटि का योगी होना सिद्ध है। मन्त्रार्थ द्रष्टा होने से वह ऋषि कहलाये। उन्होंने वेदों का अध्ययन कर उसका यथोचित् ज्ञान प्राप्त करने के बाद उससे अपनी व्यक्ति उन्नति को ही सीमित नहीं किया अपितु उससे मानवमात्र को लाभान्वित करने के लिए उन्होंने वेदप्रचार का कार्य आरम्भ किया। इस कार्य को करने की प्रेरणा व आज्ञा उन्हें अपने विद्या गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से मिली थी।

योगेश्वर श्रीकृष्ण जी ने महाभारत युद्ध में पाण्डव पक्ष का साथ दिया और उन्हें विजय प्राप्त कराई थी। वह योगी थे और एक योगी का दो सेनाओं के बीच चल रहे युद्ध में एक पक्ष को सक्रिय सहयोग देना और उनके मार्गदर्शन में उनके पक्ष का युद्ध में विजयी होने के कारण उनको योगेश्वर कृष्ण के नाम से पुकारा जाता है। स्वामी दयानन्द जी ने भी देश व विश्व में प्रचलित अविद्याजन्य सभी मतों के विरुद्ध वेदप्रचाररूपी आन्दोलन वा सत्याग्रह किया था। उन्होंने सब मतों के आचार्यों को शास्त्रार्थ की चुनौती दी थी। जिन लोगों ने उनसे शास्त्रार्थ किया उन सभी शास्त्रार्थों में स्वामी दयानन्द जी के वेदसम्मत पक्ष को विजय प्राप्त हुई थी। इस कारण वह दिग्विजयी संन्यासी बने। इस कार्य में जहां उनका वेदज्ञान सहयोगी था वहीं उनके ब्रह्मचर्य का बल व योग साधना का बल भी सम्मिलित था। साम्प्रदायिक सभी मतों पर विजय प्राप्त करने के उनके दो ही कारण थे, प्रथम वह सफल योगी थे और दूसरा उनका वेद ज्ञान उच्च कोटि का था। अतः वह दो उपाधियों के पात्र बने। योगी होकर उन्होंने विश्व के इतिहास में जो अपूर्व धार्मिक संग्राम व सफल शास्त्रार्थ किये उनसे वह योगेश्वर सिद्ध होते हैं और वेदप्रचार व अपूर्व कोटि का वेदभाष्य करने के कारण ऋषि वा महर्षि के पद पर गौरवान्वित हैं। हमें उनके जैसा ऋषि व महर्षि विश्व के इतिहास में दूसरा दृष्टिगोचर नहीं होता है।

वेदभक्त गुरु विरजानन्द जी धन्य हैं जिनका शिष्य संसार का उत्तम योगी व ऋषि बना और उनके माता-पिता भी धन्य हैं जिन्होंने ऋषि दयानन्दरूपी दिव्यात्मा को जन्म दिया था।

स्वामी दयानन्द जी स्वयं तो उच्च कोटि योगी व वेदों के विद्वान् थे, इसके साथ ही उन्होंने अपने सभी शिष्यों व अनुयायियों को भी योगी व वेदों का विद्वान् बनाया है। सन्ध्या करके मनुष्य योगी बनता है और सत्यार्थप्रकाश पढ़कर वैदिक विद्वान् बनता है। ऋषि दयानन्द जी से पूर्व भारत में चतुर्वेद भाष्यकारों में सायण का ही नाम मिलता है जिन्होंने स्वयं व अपने शिष्यों से चारों वेदों का भाष्य कराया। महीधर व उव्वट आदि के यजुर्वेद व उसके कुछ अंशों पर ही वेदभाष्य मिलते हैं। कुछ वेदभाष्यकारों के नाम तो इतिहास में ज्ञात होते हैं परन्तु उनका किया वेदभाष्य नहीं मिलता। ऋषि दयानन्द ही एकमात्र ऐसे योगी व ऋषि हुए हैं जिन्होंने चारों वेदों पर ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका जैसा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा, वहीं वह सम्पूर्ण यजुर्वेद भाष्य संस्कृत व हिन्दी भाषा में पूर्ण कर दे गये हैं। लगभग साढ़े दस हजार मन्त्र वाले ऋग्वेद का भी लगभग आधा भाष्य वह हमें दे गये हैं। असामयिक मृत्यु के कारण वह वेदभाष्य का कार्य पूर्ण नहीं कर सके। उनका वेदभाष्य अपूर्व है जिसकी तुलना उनके पूर्ववर्ती किसी भाष्यकार से नहीं की जा सकती। क्रान्तिकारी एवं योगी अरविन्द ने उनके वेदभाष्य की प्रशंसा की है। गुणवत्ता की दृष्टि से ऋषि दयानन्द जी का भाष्य सर्वश्रेष्ठ है। उनके बाद उनके अनेक शिष्यों व अनुयायियों ने वेदों पर भाष्य किये हैं। कुछ नाम हैं पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार, पं० जयदेव विद्यालंकार, पं० आर्यमुनि, स्वामी ब्रह्ममुनि, पं० विश्वनाथ विद्यालंकार, पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी, आचार्य डा० रामनाथ वेदालंकार, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती आदि। स्वामी दयानन्द जी के अनेक शिष्यों ने वेदों पर उच्च कोटि के ग्रन्थ लिखे हैं जो स्वामी दयानन्द जी के काल में उपलब्ध नहीं होते थे। अत: स्वामी दयानन्द जी की वेदों को जो देन है उसे उनके जीवन व व्यक्तित्व का सर्वोत्कृष्ट गुण कह सकते हैं। यह सब कार्य एक सफल योग साधक होने के फलस्वरूप ही सम्पन्न कर सके थे। वेदों का हिन्दी में भी भाष्य व भाषार्थ करना तो उनकी ऐसी सूझ थी जिसके लिए उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाये उतनी ही कम है। इससे पूर्व ऐसा विचार शायद किसी के मस्तिष्क में नहीं आया कि हिन्दी में भी वेदों का भाष्य किया जा सकता। उनके इस कार्य से सहस्रों व लाखों संस्कृत न जानने वाले भी वेदों के ज्ञान व तात्पर्य से परिचित हुए हैं। हम भी उनमें से एक हैं।

योग के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द जी की एक प्रमुख देन हमें उनकी सन्ध्या पद्धति प्रतीत होती हैं। सन्ध्या भी ध्यान व समाधि प्राप्त कराने में साधन रूप एक प्रकार का योग का ही ग्रन्थ है। सन्ध्या के सफल होने पर साधक ईश्वर का साक्षात्कार कर सकता है। यदि ईश्वर साक्षात्कार न भी हो तब भी योग के सात संगों को तो वह प्राप्त करता ही है। सन्ध्या का प्रयोगकर्ता वा साधक सन्ध्या से समाधि को या तो प्राप्त कर लेता है या कुछ दूरी पर रहता है। ऋषि दयानन्द की प्रेरणा व आन्दोलन के फलस्वरूप आज विश्व के करोड़ों लोग उनकी लिखी विधि से प्रात: व सायं सन्ध्या वा सम्यक् ध्यान करते हैं। सन्ध्या में अघमर्षण, मनसा-परिक्रमा, उपस्थान, समर्पण आदि मन्त्रों का विशेष महत्त्व प्रतीत होता है। अघमर्षण के मन्त्रों से पाप न करने वा पाप छोड़ने की प्रेरणा सन्ध्या करने वाले साधक को मिलती है। मनसापरिक्रमा के मन्त्रों से भक्त व साधक ईश्वर को सभी दिशाओं में विद्यमान वा उपस्थित पाता है जो उसे हर क्षण हर पल देख रहा है। ईश्वर की दृष्टि हम पर हर पल व हर क्षण 24×7 रहती है। हम ऐसा कोई कार्य कर नहीं सकते जो ईश्वर की दृष्टि में आये। अत: हमें अपने शुभ व अशुभ सभी कर्मों के फल अवश्यमेव भोगने होते हैं। अशुभ कर्मों का फल दु:ख होता है। यह हमें कर्म के परिमाण के अनुसार ही मिलता है। जैसा व जितना शुभ व अशुभ कर्म होगा उसका वैसा व उतना ही सुख व दु:खरूपी परिणाम व परिमाण होगा। अत: सन्ध्या का साधक पाप करना छोड़ देता है। यह भी सन्ध्या की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है, जबकि अन्य मतों में प्राय: ऐसा नहीं होता। उपस्थान मन्त्र में हम ईश्वर को अपने समीप व आत्मा के भीतर अनुभव करने का प्रयास करते हैं और विचार करने पर यह सत्य सिद्ध होता है कि ईश्वर सर्वव्यापक होने से हमारे बाहर व भीतर दोनों स्थानों पर है। इसमें हम ईश्वर के गुणों का वर्णन करते हैं और उससे

शेष पृष्ठ 16 पर....

ऋग्वेद-यजुर्वेद-सामवेद-अथर्ववेद ईश्वर द्वारा प्रदत्त कृत धर्मज्ञान है बाकी संसार के समस्त मतों के धर्मग्रन्थ मनुष्यों द्वारा रचित है

❑ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

वेद ही ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान है निम्न प्रमाण

सृष्टि और वेद दोनों का कर्त्ता एक ईश्वर ही है। दोनों में किसी भी प्रकार की भिन्नता नहीं है। जो सृष्टि में है वही वेद में है और जो वेद में है वही सृष्टि में होने से वेद ईश्वरकृत है। सृष्टि के आदि में ही प्रकट होने से तथा सृष्टि का समस्त विज्ञान उसी में होने से और समस्त मनुष्य मात्र के लिए विधिनिषेध रूप संविधान के होने से भी वेद ईश्वरकृत है। सृष्टि के आदि में होने वाली अमैथुनी सृष्टि के मनुष्यों पर ही प्रकट होने से तथा सृष्टि के मध्य में मैथुनी सृष्टि के मनुष्यों पर प्रकट न होने से भी वेद ईश्वरकृत है। सृष्टि की आयु (4 अरब 32 करोड़ वर्ष) पर्यन्त वेदों के बने रहने से और सूर्यचन्द्र नक्षत्र नक्षत्रादि की भांति सुरक्षित रहने से तथा अन्य मनुष्य कृत पुस्तकों के समान नश्वर न होने से भी वेद ईश्वरकृत हैं।

वेदों में मनुष्यकृत पुस्तकों के समान मिथ्याज्ञान और पक्षपातादि दोषों के न होने से भी वेद ईश्वर कृत है। किसी देश विशेष की भाषा में न होने से तथा सब देश और सब मनुष्य मात्र के लिए समान हितकारी होने से भी वेद ईश्वर कृत है। किसी सिद्ध पैगम्बर आदि पर सृष्टि के मध्य में न अवतरित होने से तथा सृष्टि के आदि में ही सब विद्याओं का प्रकाश कर देने से भी वेद ईश्वर कृत है। समाधि बुद्धि से ही जानने योग्य होने से तथा उसमें मिलावट अर्थात् प्रक्षेप के न होने से भी वेद ईश्वर कृत हैं। संशय रहित ज्ञान के होने से और बुद्धि पूर्वक ही समस्त ज्ञान-विज्ञान के होने से भी वेद ईश्वर कृत है। ईश्वर के सर्वव्यापक सर्वज्ञ सर्वशक्तिमानत्वादि गुणों के होने से एंव सर्वथा त्रुटि रहित रचना के होने से भी वेद ईश्वर कृत है। इत्यादि अकाट्य प्रबल-परमाण और हेतुओं से सिद्ध है कि वेद ईश्वर कृत है। वेद संहिता मात्र को छोड़कर अन्य सब शास्त्र कृषि प्रणीत और मनुष्य कृत है इन सब का प्रमाण वेद से ही होता है और किसी अन्य से नहीं, क्योंकि ये सब परतः प्रमाण है। इनके लिए किसी अन्य के प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। नाम और रूप के समुदाय का नाम ही संसार हैं, दोनों की रचना ईश्वर ने की है, नाम का व्याख्यान वेद में और रूप का व्याख्यान सृष्टि में कर दिया है। इसी से वेद ईश्वर कृत है।

सृष्टि और वेद ज्ञान का प्रदत्त करता ईश्वर है

नाम रूप और समुदाय का नाम संसार है। नाम का व्याख्यान वेद में है और रूप का व्याख्यान यह सृष्टि है। इस सृष्टि में जितने भी उत्पन्न हुए पदार्थ है वे सब रूप में आ जाते हैं और उन पदार्थों के जितने नाम हैं वे सब वेद में आ जाते हैं। इन नाम और रूप के समुदाय का नाम संसार है। इन दोनों को प्रकाशित करने वाला उत्पन्न करने वाला वह अद्वितीय परब्रह्म है। अर्थात् सृष्टि के सब पदार्थ का रचने वाला और उन सब का नाम रखने वाला भी ईश्वर ही है, अर्थात् नाम और रूप का कर्त्ता वही है और उसी को संसार कहते हैं।

ऐसा खाद्यान्न नहीं है कि जिस अन्न का नाम वेद में न हो। ऐसा कोई पशु नहीं कि जिसका नाम वेद में न हो, ऐसा कोई पक्षी नहीं है जिसका नाम वेद में न हो, अर्थात् पशु पक्षी कीट पतंग वृक्ष वनस्पति गुल्मलता वीरधादि ओषधों के क्षुप जड़ी बूटी कन्द-मूल फलादि के सब नाम वेद से ही प्रसिद्ध हुए हैं तथा सब अन्नों के सब खनिजों के स्वर्ण रजतादि अब धातुओं के सब नदी झील समुद्र पर्वतादि के नाम वेदों से ही प्रसिद्धि को प्राप्त हुए हैं।

अर्थात् जो भी सृष्टि में पदार्थ है उन सबका व्याख्यान वेद में है इस कारण से ही तो वेद ईश्वर कृत हैं। गणित आदि जो भी विद्या लोक में है वो सब वेदों से ही प्रकाशित हुई है। सब विद्याओं का मूलाधार वेद है। अतः ईश्वर रचित वेद को ही सकल विद्याओं का आधार मानकर समस्त सृष्टि को समझने का पूर्ण प्रयास करते रहना चाहिए।

वेदज्ञान की सभी युगों में प्रथम आवश्यकता है

संसार में जो भी समस्याएं हैं उनका एकमात्र समाधान वेद से ही सम्भव है। बिना वेद के कोई उनका समाधान नहीं दे सकता है। यदि कोई उचित समाधान है तो वह वेद में ही

है, क्योंकि वेद का ही सर्वत्र प्रकाश फैला हुआ है और जितना भी पृथ्वी पर ज्ञान विज्ञान है वह सब वेदों से ही फैला हुआ है और फैला रहेगा। अल्पज्ञ जीवों के लिए ज्ञान की प्रतिक्षण अवश्यकता रहती है उसकी पूर्ति एकमात्र वेद ज्ञान से ही सम्भव है। अत: प्रत्येक समस्या का समाधान वेदों से ही लेंवे जिससे शीघ्र समाधान मिलकर सुख लाभ हो सके।

ईश्वर सब मनुष्यों को उपासना के योग्य इष्टदेव और सब सामर्थ्य से युक्त है उसी ईश्वर से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अर्थववेद, ये चारों उत्पन्न हुए है। सृष्टि की आदि में चार मनुष्य देहधारी हुए थे, क्योंकि जड़ में ज्ञान का कार्य असम्भव था, अत: अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा-के आत्मा में चारों वेदों का ज्ञान दिया था। उन चार मनुष्यों के ज्ञान के बीच में वेदों का प्रकाश करके उनसे ब्रह्मादि की आत्मा में वेदों का प्रकाश कराया था।

उस न्यायकारी परमात्मा का साक्षात् न्याय ही प्रकाशित होता है, क्योंकि न्याय उसको कहते हैं जो जैसा कर्म करें उसको वैसा ही फल दिया आए। उन्हीं चार पुरुषों का ऐसा पूर्व पुण्य था कि उनके आत्मा में वेदों का प्रकाश किया गया, क्योंकि जीव-जीवों के कर्म और स्थूल कार्य जगत् ये तीनों अनादि है जीव और कारण जगत स्वरूप से अनादि हैं, कर्म और स्थूल कार्य जगत् प्रवाह से अनादि है।

वेद नित्य है उसके नाम गुण और कर्म भी नित्य होते हैं, क्योंकि उनका आधार ईश्वर नित्य है। बिना आधार के नाम, गुण और कर्मादि स्थिर नहीं हो सकते और जो अनित्य वस्तु है उसके नाम और गुण कर्म भी अनित्य होते हैं। नित्य उसको कहते है जो उत्पति और विनाश से पृथक् होवे।

इससे जानना चाहिए कि जो सदा निर्विकार स्वरूप, अज अनादि, नित्य सत्यसामर्थ्य से युक्त और अनन्त विद्यावाला ईश्वर है, उसकी विद्या से वेदों के प्रकट होने और उसके ज्ञान में वेदों के सदैव वर्तमान रहने से वेदों की सत्यार्थयुक्त और नित्य सब मनुष्यों को मानना योग्य है।

नोट-इस लेख में ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा ब्रह्मविद्या विज्ञान ग्रन्थों से सहायता ली गई है।

संम्पर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
मो० 9411512019, 9557641800

सुनो, ध्यान से नर-नारी!

बात भले की सुनो ध्यान से, भारत के सब नर-नारी।
देश-धर्म की सेवा की अब, कर लो पूरी तैयारी॥ टेक॥
प्यारा भारत देश हमारा, सकल विश्व का स्वामी था।
विद्या-बल में रण-कौशल में, सारे जग में नामी था।
चरित्रवान् थे भारतवासी, वैदिक पथ के हामी थे।
सुनकर उनका नाम कांपते, पापी दुष्ट हरामी थे।
गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनि, त्यागी थे वेदाचारी।
देश-धर्म की सेवा की अब, कर लो पूरी तैयारी॥ 1॥
राम, भगत, लक्ष्मण, अंगद, जैसे थे भारत वीर यहाँ।
अर्जुन, भीम, नकुल, अभिमन्यु, योद्धा थे रणधीर यहाँ।
बापा, रावल, सांगा से थे, देश भक्त गम्भीर यहाँ।
वेद विरोधी दुष्टों के, सीने देते थे चीर यहाँ।
उनके चरणों में नतमस्तक, होती थी दुनिया सारी।
देश-धर्म की सेवा की अब, कर लो पूरी तैयारी॥ 2॥
चन्द्रगुप्त, विक्रम जैसे थे, राजा वीर महान् सुनो।
देशभक्त सदाचारी थे, वेदों के विद्वान् सुनो।
सन्तों के सेवक, वृद्धों का, करते थे सम्मान सुनो।
शीलवन्त थे प्रजा का, रखते थे पूरा ध्यान सुनो।
मानवता के महापुंज थे, जो थे सच्चे न्यायकारी।
देश-धर्म की सेवा की अब, कर लो पूरी तैयारी॥ 3॥
स्वामी दयानन्द योगी ने, सोया देश जगाया था।
वेदों का प्रचार किया था, भारी कष्ट उठाया था।
आजादी का, गोरक्षा का, पावन पाठ पढ़ाया था।
प्यारे ऋषि के शिष्यों ने यह, भारत मुक्त कराया था।
श्रद्धानन्द, लाजपत जैसे, आज कहाँ हैं आचारी।
देश-धर्म की सेवा की अब, कर लो पूरी तैयारी॥ 4॥
धूर्त-स्वार्थी नेता बनकर, वर्गवाद को बढ़ा रहे।
डाकू-गुण्डे, चोरों को जो, अपने सिर पर चढ़ा रहे।
उग्रवाद, आतंकवाद का, भारत में है जोर सुनो।
गोहत्या हो रही रात-दिन, जुल्म रहे कर घोर सुनो।
घोटाले कर रहे कुचाली, जिनको है कुर्सी प्यारी।
देश-धर्म की, सेवा की अब, कर लो पूरी तैयारी॥ 5॥
देशद्रोही गद्दारों को, वीरो! सबक सिखाओ तुम।
भ्रष्टाचारी खुदगर्जों का, वीरो! वंश मिटाओ तुम।
चरित्रवान् सच्चे लोगों का, पूरा साथ निभाओ तुम।
वीर साहसी बनो साथियो! अपना देश बचाओ तुम।
'नन्दलाल' बिस्मिल, शेखर से बनो, बहादुर बलधारी।
देश-धर्म की, सेवा की अब, कर लो पूरी तैयारी॥ 6॥

—पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक, आर्यसदन
बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

वो संन्यासी जो क्रान्ति के अग्रदूत बने

—भावेश मेरजा, मो० 9879528247

कहते हैं कि जब समाज किसी संकट में पड़ जाता है, तब उसमें से निकलना तो हर कोई चाहता है, हर व्यक्ति की यही इच्छा होती है कि यह संकट दूर हो, लेकिन हर कोई उस कठिनाई का सामना करने के लिए अखाड़े में उतरने को तैयार नहीं होता। किन्तु विक्षुब्ध समाज का असन्तोष, उसकी बेचैनी जिस व्यक्ति में प्रतिबिम्बित हो जाती है और जो व्यक्ति उस असन्तोष का सामना करने के लिए खड़ा होता है, वही जनता की आशाओं का नेता होता है। स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन को इसी दृष्टि से देखा जाता है। वे समय की चुनौती का, समय की ललकार का जीता-जागता जवाब थे, जिन्होंने देश की राजनीति में युगपरिवर्तन कर दिया था। भले ही आजादी के आन्दोलन में गांधी युग का जोर-शोर से जिक्र होता हो किन्तु ये सब संभव हो पाया तो स्वामी श्रद्धानन्द के अदम्य साहस और आर्यसमाज की संगठन शक्ति के बल पर। स्वामी श्रद्धानन्द किस प्रकार चुनौती का सामना करते थे, इसके एक नहीं अनेक उदाहरण हैं। रोलेट एक्ट के विरोध में जब पूरे देश में आन्दोलन चल रहा था तो महात्मा गांधी को गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द ने इसके विरोध में बहुत बड़ी जनसभा का आयोजन किया। भीड़ जुलूस के रूप में लालकिले की ओर बढ़ी। स्वामी जी के नेतृत्व में जब जनता का जुलूस दिल्ली के घण्टाघर की तरफ बढ़ता जा रहा था, तब गोरे सिपाहियों ने जुलूस को रोकने के लिए गोली चलाने की धमकी दी थी। यह धमकी उनके लिए भारत माता की बलिवेदी पर अपने को कुर्बान कर देने की ललकार थी। साधारण मिट्टी के लोग तो उस धमकी को सुनकर ही तितर-बितर हो जाते, परन्तु वे श्रद्धानन्द ही थे जिन्होंने छाती तानकर गोरों को गोली चलाने के लिए ललकारा। इतिहास इस बात का गवाह है कि उस दिन जनता की जीत हुई। उनके कार्यों के लिए स्वयं गांधी जी ने स्वामी श्रद्धानन्द को दिल्ली का दिलवाला कहकर सम्बोधित किया था।

आजादी के आन्दोलन के साथ स्वामी श्रद्धानन्द ने सामाजिक उत्थान के लिए कई मुहिम शुरू कीं, जिनका समाज में बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ा। 1890 में देश में आर्यसमाज के द्वारा पहले महिला महाविद्यालय की स्थापना उन्होंने जालन्धर में लाला देवराज के साथ मिलकर की। 1889 में सद्धर्म प्रचारक साप्ताहिक पत्रिका निकाली जो पहले उर्दू में फिर हिन्दी में प्रकाशित की गई। प्राचीन शिक्षा प्रणाली की पुनर्स्थापना के लिए 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की नींव रखी। 1911 में गुरुकुल कुरुक्षेत्र व 1916 में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की स्थापना की। 6 दिसम्बर 1913 को भागलपुर के चतुर्थ हिन्दी सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का आह्वान किया। 1919 के कांग्रेस अधिवेशन में पहली बार स्वागताध्यक्ष का भाषण हिन्दी में हुआ। इसी में उन्होंने अस्पृश्यता निवारण मुहिम चलाने का निवेदन किया, जिसे कांग्रेस ने अपने एजेण्डा में शामिल भी किया।

1921 में दलितों की समानता का आन्दोलन दलितोद्धार शुरू किया। 1922 में हिन्दू महासभा के अध्यक्ष चुने गए। 1923 में दिल्ली में शुद्ध सभा की स्थापना की। 23 दिसम्बर 1926 को एक मतान्ध युवक ने स्वामी श्रद्धानन्द की गोलियाँ मारकर हत्या कर दी। इस घटना के बारे में जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा में लिखा—उस साल 1926 के आखिरी में हिन्दुस्तान घृणा व रोष से कांप उठा था। जिस पुरुष ने गोरखों व अंग्रेजों की संगीनों के सामने अपनी छाती खोल दी थी उस महान् योद्धा को चारपाई पर बीमारी की अवस्था में एक धर्मान्ध व्यक्ति ने कत्ल कर दिया। वह 23 दिसम्बर 1926 का दिन था।

स्वामी श्रद्धानन्द ने पूरे जीवन भर चुनौतियों का सामना किया। उन्होंने समाज के सामने सर्वप्रथम स्वयं को उदाहरण बनाकर प्रस्तुत किया। त्याग, बलिदान और तपस्या का वह देवदूत क्रान्ति का अग्रदूत बन गया।

(साभार-दयानन्द सन्देश)

संघर्ष से मिले उपलब्धि

❑ आचार्य सत्यप्रकाश, आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

जीवन में बिना संघर्ष के कोई सफलता हासिल नहीं कर सकता। कोई व्यक्ति धन कमाने के लिए किसी कम्पनी में नौकरी करता है। मान लीजिए वह कोई सामान बिक्री करने वाला प्रतिनिधि है, जिसे सेल्समैन या सेल्स रिप्रजेंटेटिव कहते हैं। वह अनेक दुकानों पर जाता है। वहाँ पर वह अपना परिचय स्वयं देता है। अपनी कम्पनी का मॉल/सामान उन्हें दिखाता है और कहता है कि हमारी कम्पनी ये वस्तुएँ बनाती हैं। इन वस्तुओं में ये विशेषताएँ हैं। इनको खरीदने और प्रयोग करने पर आपको ये लाभ होंगे। आप इन्हें देखिये और खरीदिये फिर दूसरों को बेचिए और धन कमाइए।

जब वह आरम्भ में इस प्रकार से कार्य करता है, अर्थात् वह अपना परिचय स्वयं देता है, तो यह उसके जीवन की संघर्ष की स्थिति है। कुछ वर्षों तक संघर्ष करते-करते उसका अनुभव बढ़ जाता है। फिर वह उस कम्पनी को छोड़कर अपना अलग व्यापार आरम्भ करता है। अपनी अलग कम्पनी बना लेता है। धीरे-धीरे वह पुरुषार्थ करके कुछ अच्छी मात्रा में धन कमा लेता है। समाज में उसकी कुछ प्रतिष्ठा भी बन जाती है। तब किसी कार्यक्रम या आयोजन में जाने पर, दूसरे लोग उसका परिचय देते हैं, तो यह उसकी 'उन्नति' की स्थिति है।

जब काम करते-करते वह मुकेश अंबानी जैसा कोई बड़ा व्यापारी बन जाता है। देश-दुनिया में उसका नाम प्रसिद्ध हो जाता है। उसकी अपनी कम्पनी बड़ी हो जाती है, बाजार में उसकी अच्छी प्रतिष्ठा बन जाती है। उसी अनेक योग्यताओं के कारण लोग उसे पहचानने लगते हैं, तब उसको अपना परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। तो यह अवस्था उसकी 'उपलब्धि' की कही और मानी जाती है।

यहाँ व्यापार का तो केवल एक उदाहरण मात्र दिया है। ये 'सघर्ष', 'उन्नति' और 'उपलब्धि' आदि स्थितियाँ, प्रशासन में, वेदविद्या प्रचार में, समाजसेवा में, परोपकार में, योगाभ्यास आदि किसी भी क्षेत्र में प्राप्त की जा सकती है और अपनी रुचि योग्यता एवं क्षमता के अनुसार, अपने जीवन को सफल बनाया जा सकता है। आप भी अपने-अपने क्षेत्र में पुरुषार्थ करते होंगे। आपके जीवन में भी ऐसी स्थितियाँ आई होंगी। यदि अब तक नहीं आई, तो अवश्य प्रयास करें और स्वयं को 'संघर्ष' से 'उपलब्धि' की स्थिति तक ले जाएँ तब आपका जीवन भी उन्नत सुखमय और सफल कहलाएगा। जीवन में प्रत्येक व्यक्ति सफल होना चाहता है। सही बात है। सबको सफलता मिलनी भी चाहिए क्योंकि सफल होने पर व्यक्ति को सुख होता है और असफल होने पर दुःख। अब जीवात्मा का यह स्वभाव है कि वह सुख को चाहता है, दुःख को नहीं। सुख मिलता है सफल होने से, इसलिए वह सफल होना चाहता है।

तो सफलता कैसे मिलती है? व्यक्ति पहले यह निर्धारण करे कि कौन-सा काम ठीक है? ईश्वर के संविधान के अनुकूल है? फिर इस बात को जानकर वह उस को करने के साधन जुटायें। फिर उन साधनों से आत्मविश्वास के साथ पूर्ण पुरुषार्थ करें। तब उसे ईश्वर की कृपा, समाज के बुद्धिमान् लोगों का सहयोग, अपना आत्मविश्वास एवं पूर्ण पुरुषार्थ इत्यादि साधनों से अपने कार्यों में सफलता मिलती है।

इन सब साधनों में एक महत्त्वपूर्ण साधन है—आत्मविश्वास, अर्थात् उसे स्वयं पर यह भरोसा होना चाहिए कि मैं जो काम कर रहा हूँ, यह ईश्वर संविधान के अनुकूल है, सही है और ईश्वर ने मुझे इतनी क्षमता दी है कि मैं इस काम को अच्छी प्रकार से कर सकता हूँ, इसे आत्मविश्वास कहते हैं। तो जब व्यक्ति इस आत्मविश्वास से पूर्ण पुरुषार्थ करता है तब उसे अपने कार्यों में सफलता मिलती है, तो इससे उसका आत्मविश्वास और अधिक बढ़ जाता है तब वह और भी अधिक अच्छे-अच्छे और बड़े-बड़े काम करने लगता है। उन कार्यों को करने में ईश्वर तथा समाज के बुद्धिमान लोग भी ऐसे व्यक्ति को सहयोग देते हैं।

इस प्रकार से वह व्यक्ति जीवन में लगातार उन्नति करता जाता है, तो सारी बात का सार यह हुआ कि

शेष पृष्ठ 14 पर....

ईश्वर की उपासना का महत्त्व जानें व इसका ज्ञानपूर्वक पालन करें

❑ मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, मो० 9412985121

उपासना क्या है और इसे क्यों करना चाहिये? उपासना करने के क्या लाभ हैं? यह विषय किसी भी मनुष्य के लिए उपेक्षणीय नहीं है। उपासना पास बैठने को कहते हैं। हम अपनी माता की गोद में होते हैं तो हमें माता का स्नेह तथा उससे ज्ञान प्राप्त होता है। माता हमारी क्षुधा निवृति सहित सभी प्रकार से पोषण करती है। हमें अक्षर व शब्दों को बोलकर भाषा के ज्ञान सहित बहुमूल्य ज्ञान देती है। पिता भी ऐसा ही करते हैं। गुरुकुलों व पाठशालाओं में आचार्य व आचार्यायें भी अपने शिष्य-शिष्याओं को अपने पास बैठाते व उनके पास बैठकर उनके जीवन की न्यूनताओं को ध्यान में रखकर उन्हें सदाचार सहित ज्ञान व विज्ञान की शिक्षा देते हैं। मनुष्य जब शीत से आतुर होता है तो अग्नि के पास बैठकर शीत की निवृत्ति करता है। गर्मी के दिनों में लोग जलाशयों व नदियों में जाकर स्नान करते हैं और उससे उष्णता के प्रकोप को दूर करते हैं। यह सब अवस्थायें व स्थितियां उपासनायें हैं जिससे उपासना के अनुरूप हम लाभान्वित होते हैं। अतः हमें अपनी कमियों को दूर करने के लिये उस कमी से रहित ज्ञानी, कर्म-प्रवीण व अनुभवी व्यक्तियों की निकटता व उनकी उपासना प्राप्त कर उन्हें दूर करना चाहिये। हम सब ऐसा ही करते भी हैं। यही उपासना होती है।

मनुष्य को अपने अतीत का नहीं पता। हम इस जन्म में आने से पूर्व कहां थे? क्या करते थे? निठल्ले पड़े थे या किसी मनुष्य व अन्य योनि में थे? हमें जन्म किसने दिया? हमारी मृत्यु निश्चित है। एक सौ वर्ष के भीतर कभी भी हमारी मृत्यु हो सकती है। संसार में सृष्टि के आरम्भ से मनुष्य उत्पन्न होते आ रहे हैं। आज सौ व एक सौ पच्चीस वर्ष की आयु से अधिक का कोई स्त्री व पुरुष संसार में नहीं है। इससे पूर्व उत्पन्न व बाद के भी अनेक लोग जिनकी संख्या अरबों में नहीं खरबों से भी अधिक होती है, मर चुके हैं व परलोक में जा चुके हैं। परलोक का अर्थ इतना ही है कि इस लोक व स्थान से दूसरे लोक या दूसरे किसी स्थान जो इसी लोक में भी हो सकता है, जा चुके हैं। पुनर्जन्म होना ही पूर्वजन्म की अपेक्षा से परलोक है। ऐसा ही हमारे व सभी के साथ होता है व होगा। जब हम विचार करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि इच्छा, द्वेष, सुख व दुःख का अनुभव करने वाली हमारी एक चेतन आत्मा है। यह अनादि व अमर है। इसका नाश व अभाव कभी नहीं होता है। यह जन्म व मरणधर्मा है। जन्म का कारण कर्म-फल सिद्धान्त है। हमारा जन्म हमारे पूर्व जन्म व जन्मों के बचे हुए कर्मों के फलों का भोग करने के लिये हुआ है। अनादि काल से यह क्रम चल रहा है और अनन्त काल तक चलने वाला है। इसके विपरीत आज तक किसी व्यक्ति ने कोई तर्क नहीं दिया है। अतः यह निर्विवाद व सर्वमान्य सत्य है।

आत्मा के स्वरूप व परमात्मा को जानना हमारा कर्तव्य है। इसका ज्ञान हमें इस कल्प के आदि ग्रन्थ वेद से मिलता है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद के अतिरिक्त उपनिषद्, दर्शन, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि अनेक ग्रन्थ भी ईश्वर व आत्मा का सत्य-सत्य ज्ञान हमें कराते हैं। आत्मा और जन्म का ज्ञान हो जाने पर हमारे सम्मुख यह प्रश्न आता है कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है? पूर्वजन्मों के कर्मों के फलों का भोग तो करना ही है, परन्तु कर्मों के फलों का भोग करना और कौन से कर्म विहित व कौन से निषिद्ध हैं, यह ज्ञान हमें प्राप्त करना होता है। यह ज्ञान हमें मत-मतान्तरों के आचार्यों व उनके ग्रन्थों से ठीक-ठीक प्राप्त नहीं होता। वेद व वेदानुकूल ग्रन्थों सत्यार्थप्रकाश आदि से इस विषय का भली प्रकार से ज्ञान होता है। हमें ज्ञात होता है कि ईश्वर ने जीवों के लिये इस सृष्टि को बनाया है। यह सृष्टि अति विशाल है। असंख्य जीवों को ईश्वर ने इस ब्रह्माण्ड के अनेक लोक-लोकान्तरों में जन्म दिया है। उनके जन्म का उद्देश्य ईश्वर व आत्मा को जानना है। इस ज्ञान को प्राप्त होकर ईश्वर उपासना से अपने दोषों व दुर्गुणों का त्याग करना भी कर्तव्य है। उपासना से ईश्वर को प्राप्त करना, उसका प्रत्यक्ष करना और समाज व देशहित सहित मानवता व सज्ज्ञान का प्रसार करना यह भी मनुष्य के कर्तव्य है। यही कार्य हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि करते रहे और ऋषि

दयानन्द जी ने भी ऋषियों की इस परम्परा को जारी रखते हुए हमें ईश्वर के वेदज्ञान के सत्यस्वरूप व सत्य वेदार्थ से परिचित कराकर हमारा कल्याण किया है। वेदाध्ययन करके हम जान पाते हैं कि हमारा इष्टदेव व प्राप्तव्य ईश्वर ही है। इसके लिये हमें वेदविहित कर्मों को करना है। हमें वेदों में निषिद्ध कर्मों का त्याग करना है। असत्याचरण, परनिन्दा, अभक्ष्य पदार्थों का सेवन, मत-मतान्तरों की हानिकारक बातों से पृथक् रहना है। ऐसे कार्य करना ही हमारा कर्तव्य निर्धारित होता है। ईश्वर की उपासना हम उसके उपकारों के प्रति धन्यवाद वा कृतज्ञता व्यक्त करने के लिये करते हैं। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो हम कृतघ्न होंगे और उपासना के जो लाभ होते हैं उनसे वंचित रहेंगे।

उपासना की विधि पर ऋषि दयानन्द जी ने विस्तार से प्रकाश से डाला है। उन्होंने उपासना सहित देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ एवं बलिवैश्वदेवयज्ञ की पुस्तक पंचमहायज्ञ विधि भी लिखी है। संस्कारविधि पुस्तक में पंचमहायज्ञों का भी विधान किया है और इनकी पद्धति भी लिखी है। इसे पढ़कर हमारा सभी प्रकार का समाधान हो जाता है। उपासना का समय प्रातः व सायं तथा दिवस व रात्रि की सन्धि वेलायें हैं। इस समय शारीरिक शुद्धि करके अपने घर के किसी एकान्त स्थान व शान्त स्थान में लगभग 1 घंटा बैठकर स्वाध्याय व उपासना करनी चाहिये। सन्ध्या के मन्त्रों का पाठ करते हुए उसके अर्थों पर विचार करना चाहिये। इसके लिये सन्ध्या की पुस्तक पास में रखकर जिनका अर्थ पता न हो, उसे देख लेना चाहिये। जब हमें सन्ध्या के मन्त्रों की स्मृति व उनके अर्थों का ज्ञान हो जायेगा तो हमें सन्ध्या एक आवश्यक कार्य व कर्तव्य प्रतीत होने लगेगा और हम इसे किये बिना नहीं रह पायेंगे। सन्ध्या हम घर पर रहकर, यात्रा व अन्य स्थानों पर जाकर तथा किसी भी स्थान पर कर सकते हैं। इसके लिये मात्र एक आसन तथा आचमन, इन्द्रिय स्पर्श तथा मार्जन के लिये कुछ जल की ही आवश्यकता होती है जो प्रायः आसानी से सुलभ हो जाता है। यदि आसन व जल न मिलें इनके बिना भी सन्ध्या की जा सकती है। सन्ध्या को व्यवस्थित करने के लिये हमें सन्ध्या विषयक ऋषि दयानन्द और आर्य विद्वानों की पुस्तकों को पढ़ना चाहिये। सन्ध्या पर पं० विश्वनाथ वेदोपाध्याय, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय तथा पं० चमूपति जी आदि ने व्याख्यान लिखे हैं। इनसे सन्ध्या का रहस्य विदित होता है और सन्ध्या में प्रवृत्ति प्रगाढ़ होती है।

सन्ध्या हमारा धर्म व कर्तव्य है। इसके त्याग से हानि व करने से कर्तव्य पूर्ति का लाभ प्राप्त होता है। सन्ध्या में हम ईश्वर की संगति व उसका उपवास व उपासना को प्राप्त होते हैं। यह आत्मा की उत्तम व श्रेष्ठ स्थिति है। हमें इससे वंचित नहीं रहना चाहिये। अपने मन को सत्य से शुद्ध रखेंगे तो हमारी सन्ध्या में प्रवृत्ति हो सकती है। खाली समय में हम वेदभाष्य, उपनिषद भाष्य व दर्शनों सहित सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन कर सकते हैं। उपासना में हम अपनी पसन्द के ईश्वर भक्ति के भजनों को भी गुनगना सकते हैं। ऐसा करने से हमारी ईश्वर से निकटता बढ़ती है और हमें उपासना के लाभ प्राप्त होना आरम्भ हो जाते हैं। हमारे दुर्गुणों व दुःखों का नाश होने लगता है। हमारी आवश्यकतायें कम होने लगती है। हम अनेक विघ्नों व बाधाओं से बचते हैं। अनेक विपत्तियों में हमें धैर्य व सहनशक्ति प्राप्त होती है। हमारा स्वाध्याय ऐसे समयों पर हमारा मार्गदर्शन करता है। स्वाध्याय व उपासना से हम चारित्रिक पतन के कार्यों से भी बचते हैं। जिस प्रकार एक कुशल चालक के वाहन में बैठकर हम सुगमता से अभीष्ट स्थान पर पहुंच जाते हैं उसी प्रकार से सन्ध्या करके हम ईश्वर को अपना जीवन सौंपकर निश्चिन्त हो जाते हैं और ईश्वर हमें हमारे जीवन व आत्मा के अभीष्ट पर पहुंचा देते हैं।

ऋषियों व महापुरुषों के जीवन में हमें यही देखने को मिलता है। वह सभी अपने जीवन को ईश्वर को समर्पण कर देते थे। सन्ध्या में एक समर्पण मन्त्र भी आता है। इसमें हम ईश्वर को आत्मसमर्पण करते हुए प्रार्थना करते हैं। हम प्रार्थना में कहते हैं कि ईश्वर हमें धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की शीघ्र व तत्काल प्राप्ति कराये। हमें लगता है कि उपासना मनुष्य जीवन में राक्षसी प्रवृत्तियों को दूर कर देवत्व उत्पन्न करती है। हमने ऐसे लोगों की कथायें भी सुनी व पढ़ी हैं जो संगति व उपासना से निम्नतम जीवन से देवत्व को प्राप्त हुए थे। डाकू रत्नाकर की घटना भी हम जानते हैं। इसमें बताया जाता है कि डाकू रत्नाकर संगति व उपासना को

करके महर्षि बाल्मीकि बन गये थे। आर्यसमाज में भी ऐसे उदाहरण हैं कि डाकुओं ने वेदोपदेश सुनकर अपना निन्दित काम छोड़कर सन्मार्ग ग्रहण किया था। महात्मा मुंशीराम जी युवावस्था में मांस व मदिरा का सेवन करते थे। ऋषि दयानन्द के सत्संग से वह देश के शीर्ष महापुरुष व सच्चे महात्मा बने। उन्होंने सच्चे अर्थों में देश का कल्याण किया। देश में महात्मा कहलाने वाले अन्य लोगों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के अनुरूप शायद ही काम व व्यवहार किया हो। वेदज्ञान से दूर व्यक्ति अधिकाधिक मानवीय व दैवीय गुणों से युक्त सच्चा महात्मा नहीं बन सकता ऐसा हम समझते हैं।

उपासकों की सबसे बड़ी शिकायत होती है कि सन्ध्या में मन नहीं लगता। इसका वह क्या उपाय करें? इसका उपाय तो यह है कि हम सन्ध्या क्यों कर रहे हैं, इसका हमें ज्ञान होना चाहिये। सन्ध्या करते समय हमें ईश्वर के सत्यस्वरूप का ज्ञान रहना चाहिये। ईश्वर हमारे बाहर व भीतर है और हमें मन व हृदय के सभी विचारों व भावनाओं को जान रहा है। हमें इसका विचार करना चाहिये। उपासना में हम सन्ध्या के मन्त्रों का उनके अर्थों पर विचार करते हुए पाठ करें। पाठ के बाद उन मन्त्रों के अर्थों पंर कुछ-कुछ देर विचार करते हुए ईश्वर के जन्म-जन्मान्तरों में किये उपकारों को स्मरण करें। जब यह क्रम समाप्त हो जाये तो हम ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना विषय के आर्य विद्वानों के ग्रन्थों का पाठ भी कर सकते हैं। ईश्वर विषयक साहित्य का स्वाध्याय भी एक प्रकार की उपासना ही है। इसमें हम ईश्वर विषयक चर्चाओं को ही पढ़ते व उनका अनुभव करते हैं। इसमें हमारा मन भी आसानी से स्थिर हो जाता है। इस अवसर पर हम आर्याभिविनय सहित ऋग्वेदभाष्यभूमिका के ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-याचना, उपासना तथा मुक्ति प्रकरणों का स्वाध्याय कर सकते हैं। मुक्ति प्रकरण उपासना में दृढ़ता लाता है अत: इसे भी पढ़ सकते हैं। सत्यार्थप्रकाश का सातवां समुल्लास पढ़कर उसके कुछ स्थलों पर विचार कर सकते हैं। ऐसा करने से हमारा मन उपासना में लगना आरम्भ हो जाता है।

मन को ईश्वर में स्थिर करने के लिये हमें मन को प्राणायाम से नियंत्रित करने का प्रयत्न करना चाहिये। मन में वैराग्य भावना उत्पन्न करनी चाहिये। हमें ज्ञात होना चाहिये कि हमारा कभी भी प्राणान्त हो सकता है। अत: ईश्वर के ध्यान के लिये समय निकालना तथा ओ३म् व गायत्री मन्त्र जप करना भी लाभकारी होता है। हमारा भोजन अल्प मात्रा में होना चाहिये तथा निद्रा व जागरण का समय भी शास्त्रों के विधानों व ऋषियों के वचनों के अनुसार रखना उचित होता है। इन सब बातों को करेंगे तो हम सन्ध्या व उपासना करते हुए कुछ अधिक देर तक उपासना कर सकते हैं। धीरे-धीरे ध्यान वा उपासना के अभ्यास को हम बढ़ा सकते हैं। ईश्वर से ही प्रार्थना करनी चाहिये कि वह हमारे मन को उपासना में स्थिर रखे। हमने ऐसे युवक व अधिक आयु के व्यक्ति देखे हैं जो प्रात: 4.00 बजे ही शौच आदि से निवृत्त होकर सन्ध्या करने बैठ जाते हैं और पूरा एक घंटा व कुछ अधिक समय तक बैठकर इसको करते हैं। अत: दृढ़तापूर्वक सन्ध्या करते हुए पूरा समय बैठने का प्रयास करना चाहिये। कुछ समय बाद उपासना की समयावधि में वृद्धि हो सकती है और मन भी ईश्वर में स्थिर होना आरम्भ हो सकता है। ऋषि दयानन्द ने शंका-समाधान करते हुए फर्रुखाबाद के लाला मुन्नीलाल तथा जगन्नाथ को स्वामी जी ने बताया था कि गायत्री जप से बुद्धि शुद्ध होती है और सन्ध्या में सबको गायत्री का जप करना चाहिये। चासी के एक रुई धुनिये के प्रश्न के उत्तर में स्वामी जी ने उसे 'ओ३म्' का जप करने का उपदेश किया था। व्यवहार में सच्चा रहने की बात कहकर उन्होंने उसे कहा था कि जितनी रूई कोई तुम्हें धुनने को दे, उसे उतनी ही रूई धुनकर लौटा दो। इसी से तुम्हारा कल्याण हो जायेगा।

हमने इस लेख में उपासना की चर्चा की है। यह लेख बहुत अधिक नहीं परन्तु किन्हीं बन्धुओं के लिए कुछ उपयोगी हो सकता है। पाठक अपनी स्थिति के अनुसार इसका मूल्यांकन कर सकते हैं। यदि कुछ अच्छा लगे तो ग्रहण करें और कुछ न्यूनता हो जिसे हमें बताना चाहें तो अवश्य हम पर कृपा करें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार-पत्र की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।
सम्पर्क-मो० 08901387993

डॉ. रामप्रकाश आर्य दिवंगत

कांग्रेस नेता डॉ० रामप्रकाश का जन्म पांच अक्तूबर 1939 को जिले के तंगोर गांव में ओबीसी और विश्वकर्मा पृष्ठभूमि में हुआ था। कड़ी मेहनत के दम पर, उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से रसायन विज्ञान में एमएससी और पीएचडी की डिग्री उत्तीर्ण की और उसके बाद लंबे समय तक इस संस्थान में पढ़ाया। पूर्व सांसद डॉ. रामप्रकाश का लंबी बीमारी के चलते करीब 84 वर्ष की आयु में निधन हो गया है। उनके शव का शाम तीन बजे सेक्टर पांच के शिव धाम में अंतिम संस्कार किया गया। डॉ. रामप्रकाश 2007-2014 तक राज्यसभा के सदस्य रहे और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के चांसलर भी रहे। उन्होंने 1990-1991 में राजनीति में प्रवेश किया उनके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि शोक-सन्तप्त परिवार को सुख-शान्ति तथा डॉक्टर साहब को अपने चरणों में स्थान दे। —सभामन्त्री

सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से सम्बन्धित समस्त आर्यसमाजों एवं संस्थाओं के अधिकारियों को अवगत कराया जाता है कि जो भी आर्यसमाज एवं संस्था सभा के PAN नम्बर तथा 80G का प्रयोग कर रही हैं, वह सभा कार्यालय को सूचित करें। ऐसा न करने की अवस्था में वह आर्यसमाज तथा संस्था हानि के लिए स्वयं जिम्मेवार होंगी। — उमेद शर्मा, सभामन्त्री

शोक-समाचार

दिनांक 11 अप्रैल 2024 को प्रसिद्ध आर्यनेता आर्यसमाज हिसार के प्रधान समाजसेवी चौ० हरिसिंह सैनी पंचतत्त्व में विलीन हो गए। दिनांक 12 अप्रैल 2024 को उनका ऋषिनगर स्थित श्मशान घाट में अंतिम संस्कार किया गया। इसके साथ ही आर्यसमाज की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं से जुड़े हुए मैनेजमेंट कमेटी व स्टाफ के सदस्यगणों सहित हजारों की संख्या में शहर के गणमान्य जनों ने मौजूद रहकर श्री सैनी को अंतिम विदाई दी। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है एवं दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनके परिवार को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति तथा धैर्य प्रदान करे।

—सभामन्त्री

प्रेरक वचन

- शिखर पर पहुँचना आसान है, परन्तु उस पर टिके रहना मुश्किल होता है।
- पुस्तकें विश्व की खिड़कियाँ हैं।
- प्रार्थना हृदय की पुकार है।
- जीवन में समस्याएं नहीं, सिर्फ चुनौतियां हैं।
- हर बुरे अनुभव से भी एक अच्छी सीख मिलती है।

संकलन—भलेराम आर्य, गांव सांघी (रोहतक)

संघर्ष से मिले उपलब्धि.... पृष्ठ 10 का शेष....

आत्मविश्वास पूर्वक यदि किसी कार्य को किया जाए तो उसमें सफलता मिलती है और उस सफलता से और आगे आत्मविश्वास बढ़ता है। इस प्रकार से आत्मविश्वास और सफलता, ये दोनों एक-दूसरे को बढ़ाने वाले हैं। उस सफलता से फिर व्यक्ति को सुख मिलता है। सुख को प्राप्त करना ही व्यक्ति का मुख्य प्रयोजन है। अतः जीवन में सफलता एवं सुख प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन सुबह से ही आत्मविश्वास पूर्वक सब अच्छे कार्य करें। विश्वास कीजिए आप जीवन में अवश्य ही सफल व सुखी होंगे।

भजन

सुनहरा सिंह नरवाल

टेक—ज्ञान ध्यान के विद्वान्-विदुषी-विज्ञान-विशेषज्ञ श्याणे।
जिन्हें ग्रह-नक्षत्र-सूर्य-चन्द्र-तारे-ब्रह्माण्ड रहस्य जाणे॥

1. समय-सारिणी माप-तौल-व्यास-ध्रुव-दिशा दूरी।
सूक्ष्म विशाल ग्रह सौरमण्डल में घूमै न्यारे-न्यारे केन्द्र धूरी॥
घूम-घूम दिन-रात बणै टेम पै ऋतु छंऊ पाबन्द पूरी।
योजन-प्रयोजन वृत-वृत्ति-गति-अति-पदार्थ-निर्माण थ्यूरी॥
जर्रा-जर्रा हर तरां प्रकृति पालन विधिपूर्वक पाणे।
जिन्हें ग्रह-नक्षत्र..... ॥

2. 8 करोड़ 58 लाख 25 हजार मील व्यास सूर्य का 6000 डिग्री सेंटीग्रेट तापमान।
7900 मील भूमि का ब्यास सूर्य से 9 करोड़ 30 लाख दूर मान॥
सूर्य की किरण 8 मिनट में पड़ै धरती पर 14 डिग्री सेंटीग्रेट ताप जान।
सूर्य की परिक्रमा करै पृथिवी 23 घण्टे 56 मिनट 9 सैकेंड में अपनी धूरी पै एक चक्र लान॥
1037 मील प्रति घण्टा की गति से धूरी पै पृथ्वी-सूर्य की परिक्रमा एक सैकेंड में 18 की दूरी तय कराणे।
जिन्हें ग्रह-नक्षत्र..... ॥

3. सूर्य की परिक्रमा में पृथ्वी की गति एक लाख एक सौ निनानवें मील प्रति घण्टा।
एक वर्ष में पृथ्वी से सूर्य की परिक्रमा पूरी हो लगातार यूहै टण्टा॥
सूर्य और सौरमण्डल का ब्यास एक शंख 18 खरब मील बणता।
चन्द्रमा 2 लाख चालीस हजार मील दूर से पृथ्वी की परिक्रमा मणता॥
चन्द्र 17 दिन सात घण्टे 56 मिनट 12 सैकेण्ड में पृथ्वी की परिक्रमा पूरी कर आणे।
जिन्हें ग्रह-नक्षत्र..... ॥

4. सबसे बड़ा ग्रह बृहस्पति अपनी धूरी पर 9 घण्टे 55 मिनट में घूमता।
जो 333 दिन में सूर्य की परिक्रमा पूरी करै झूमता॥
सर्वाधिक दीप्तमान व्याध नामक तारा सूर्य से 21 गुणा बड़ा सै न्यू मता।
ओजोन गैस परत गर्मी न रोकैं ना तै सूर्य-पृथ्वी न अति भूनता॥
'सुनहरासिंह नरवाल' कवि की अद्भुत रचना मर्याद मुंकर गाणे।
जिन्हें ग्रह-नक्षत्र..... ॥
ज्ञान ध्यान के विद्वान-विदुषी-विज्ञान-विशेषज्ञ श्याणे।
जिन्हें ग्रह-नक्षत्र-सूर्य-चन्द्र-तारे-ब्रह्माण्ड रहस्य जाणे॥

संपर्क-रिटायर्ड सब-इंस्पेक्टर हरयाणा पुलिस रोहतक, गांव-कथूरा, तह० गोहाना, जिला सोनीपत। हाल निवासस्थान-नरवाल हाउस नियर 'ओमेक्स सिटी' दिल्ली रोड रोहतक।
मो० 09416357176

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है, तो कल है।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार पत्र में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

आवश्यक सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि जिन ग्राहकों का जो भी बकाया शुल्क बनता है, वह बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करें या मनीऑर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर भेजते रहें। शुल्क भेजते समय आप ग्राहक संख्या व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।
—रघुवरदत्त, पत्रिका लिपिक, मो० 7206865945

योगेश्वर एवं वेदर्षि दयानन्द..... पृष्ठ 6 का शेष.....

स्वस्थ शरीर, बलवान इन्द्रिय शक्ति और सौ व अधिक वर्षों की आयु मांगते हैं। गायत्री मन्त्र बोलकर हम ईश्वर से बुद्धि की पवित्रता व उसे सन्मार्ग में चलने की प्रेरणा करने की प्रार्थना करते हैं। समर्पण मन्त्र बोलकर हम ईश्वर से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को आज व अभी प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं। ईश्वर को नमन के साथ हमारी सन्ध्या समाप्त होती है। वेदों का स्वाध्याय भी सन्ध्या का अनिवार्य अंग है। सभी वैदिक धर्मी अनुयायी वेदों का स्वाध्याय करते हैं जिससे वह अन्धविश्वास, मिथ्या ज्ञान व दुर्गुणों से बचते हैं। वैदिक सन्ध्या भी ऋषि दयानन्द की मानवमात्र को बहुत बड़ी देन है। यह बात अलग है कि कोई मनुष्य मत-मतान्तरों की अविद्या के कारण उसे ग्रहण करे या न करे। जो करता है वह अपना लाभ करता है और जो नहीं करता वह अपनी हानि करता है।

स्वामी दयानन्द जी सच्चे योगी एवं वेदर्षि थे। वह ईश्वरभक्त, वेदभक्त, देशभक्त, मातृ-पितृभक्त, आचार्य व गुरुभक्त, देश व समाज के हितैषी, देश के स्वर्णिम भविष्य के स्वप्नद्रष्टा, सच्चे समाज सुधारक, अविद्या व अन्धविश्वास निवारक, देशवासियों को सत्यपथानुगामी बनाने वाले, सामाजिक असमानता को दूर करने वाले, सबको वेदाधिकार दिलाने वाले, समाज से छुआछूत व ऊंच-नीच के भेदभाव को दूर करने वाले, दलितों व ब्राह्मण आदि सभी को वेद पढ़कर उच्च कोटि का विद्वान् व योगी बनने की प्रेरणा करने व अधिकार दिलाने वाले इतिहास के अपूर्व आदर्श महापुरुष थे। उन्होंने हमें सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक दिव्य ज्ञान के ग्रन्थ प्रदान किये हैं। इनके कारण हम संसार में आज भी विश्वगुरु हैं। स्वामी दयानन्द के कारण मत-मतान्तरों के आचार्यों को उनके मतों व ग्रन्थों के अविद्यायुक्त होने का ज्ञान व अनुभव हुआ है। कोई न तो वैदिक सिद्धान्तों का खण्डन करता है और न आर्यसमाज के विद्वानों से किसी विषय पर शास्त्रार्थ के लिए तत्पर होता है। लेख को विराम देने से पूर्व हम यह कहना चाहते हैं कि स्वामी दयानन्द जी जैसा ब्रह्मचारी, योगी व वेदज्ञानी महाभारतकाल के बाद दूसरा नहीं हुआ। हम उनको नमन करते हैं।

(फेसबुक से साभार)

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

कन्या गुरुकुल डोभी जिला हिसार में दिनांक 24 अप्रैल से 26 अप्रैल 2024 तक वेदप्रचार कार्यक्रम किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री सत्यपाल आर्य 'मधुर' जी ने नैतिक शिक्षा, ईश्वरभक्ति, स्वामी दयानन्द जी के विषय में पाखण्ड, अन्धविश्वास एवं राष्ट्रभक्ति के भजनों से बच्चों को एवं नारी उत्थान के विषयों में भजनों के माध्यम से लाभान्वित किया। कन्या गुरुकुल डोभी जिला हिसार के आचार्य श्री बलजीत आर्य ने सभा को 1100/- रुपये की राशि सभा को दी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में आर्यवीर एवं आर्यवीरांगनाओं का

प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर

आचार्य श्री देवव्रत जी, महामहिम राज्यपाल, गुजरात एवं संरक्षक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पावन सान्निध्य में तथा श्री राधाकृष्ण आर्य, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मार्गदर्शन में दिनांक 1 जून से 5 जून, 2024 आर्यवीर (लड़कों) के लिए तथा 7 जून से 11 जून, 2024 आर्यवीरांगना (लड़कियों) के लिए गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरयाणा) में आयोजित की जाएगी जिसमें आर्यवीर दल के अनुभवी शिक्षकों द्वारा आर्यवीरों का व आर्यवीरांगनाओं को शारीरिक विकास हेतु योगासन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, पी.टी. एवं सूर्यनमस्कार आदि का प्रशिक्षण दिया जाएगा। साथ ही बौद्धिक एवं आत्मिक विकास हेतु सन्ध्या-यज्ञ, नैतिक शिक्षा, शिष्टाचार एवं व्यक्तित्व विकास आदि का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा।

अधिक जानकारी के लिए निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें—महाशय जयपाल आर्य—86890-01136, जसविन्द्र आर्य—86890-01210, मनीराम आर्य—86890-01506, सूर्यदेव आर्य—94167-15537, विशाल आर्य—96712-32436, अनिल आर्य—74043-00951, संजय आर्य—99911-64422, आर्यमित्र—99911-96728

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य के कैथल स्थित कार्यालय में श्री संजय सेतिया जी मंडलपति कैथल आर्यवीर दल, श्री लक्ष्मण जी शिक्षक आर्यवीर दल का सेठ राधाकृष्ण आर्य जी ने स्वागत किया और अच्छे कार्यों के लिए प्रोत्साहित किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य जी ने आर्यसमाज रेलवे रोड जींद के तत्त्वावधान में आयोजित वेदप्रचार महोत्सव में शिरकत की एवं सभा को संबोधित किया तथा सभामन्त्री श्री उमेद शर्मा जी आदि अनेक विद्वान् मंच पर विराजमान हैं।

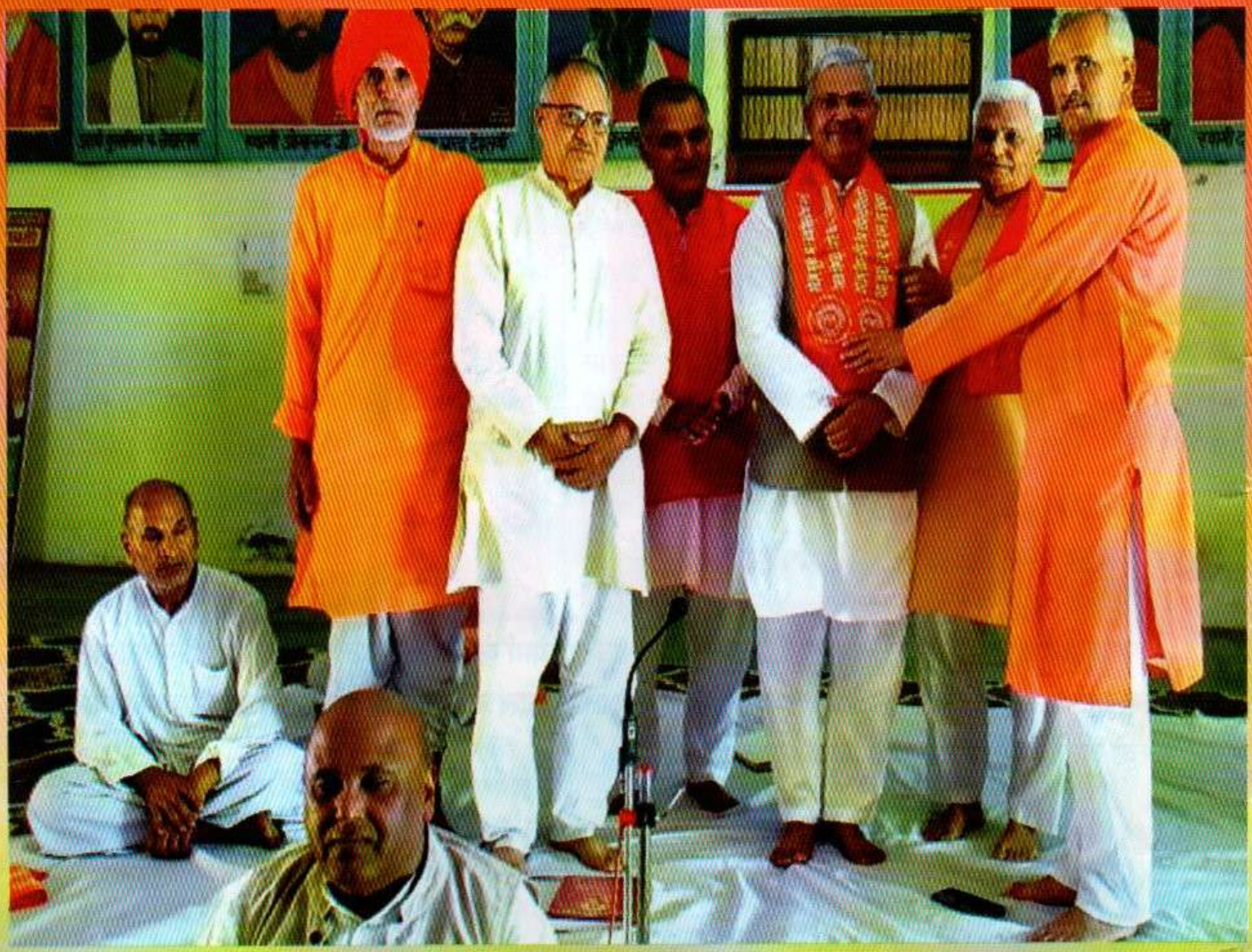

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के मासिक वैदिक सत्संग में वैदिक विद्वान् मुख्यवक्ता डॉ. सुरेन्द्र कुमार तथा मंच पर उपस्थित डॉ. सतीश प्रकाश जी (अमेरिका) का मंच पर पहुँचने पर हार्दिक सम्मान किया गया। सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रमेश आर्य, आचार्य सन्तराम आर्य, श्री सुभाष सांगवान, ब्रह्मचारी सत्यकाम आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री .....

पता .....

.....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा